Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Vol (II)

12 January 2019 Special Issue – 68

महिला सबलीकरणाच्या समस्या : आव्हाने आणि उपाय

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue
Prof. A.R. Bhosle
Assist. Prof. Head of Dept. Sociology
Vasant Mahavidalaya , Kaij, Dist. Beed

Dr. S.K. Gaike
Assist. Prof. Dept. of Sociology
Vasant Mahavidalaya , Kaij, Dist. Beed

SWATIDHAN PUBLICATION

Visit to - www.researchjourney.net

Scanned with CamScanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue -92 , महिला सबलीकरणच्या समस्या : आव्हाने आणि उपाय

39.	जागतिकिकरण आणि महिलांचे सबलीकरण	प्रा. विरभद्रेश्वर सामलिंग स्वामी	106
40.	कौटुंबिक हिंसाचार कायदा–2005 आणि स्त्रियांपुढील आव्हाने	प्रा.डॉ. अन्सारी एस. जी.	109
41.	नारीवादी अध्ययन तथा लेखन की आवश्यकता	डॉ.व्यास सी.पी.	111
42.	कळंब तालुक्यातील पारधी जमातीच्या स्त्रिंया आणि लिंगभाव विषमता	प्रा. ईश्वर लक्ष्मण राठोड	113
43.	कौटुंबिक हिंसाचार आणि स्त्रिया	डॉ. चांगदेव निवृत्ती मुंढे,	116
44.	मराठी स्त्रीवादी साहित्य, समाज आणि स्त्रिया	प्रा.डॉ. रामकिशन दहिफळे	119
45.	महिलांमधील रोजगार योजने संदर्भातील जागरूकता आणि लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	डॉ. अनिता जिवतोडे (टेकाडे)	121
46.	लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	श्री. बापू तुकाराम बाराते	124
47.	साहित्य समाज आणि स्त्रिया	डॉ. जनार्दन काटकर	126
48.	कौटुंबिक हिंसाचार कायदा २००५ आणि स्त्रियांपुढील आव्हान	डॉ. रेखा एम. शेरकर	129
49.	परित्यक्ता स्त्रियांचे प्रश्न	प्रा.डॉ.संतोष देशमुख	132
50.	भारतीय समाज व्यवस्थेला लागलेली किडः हुंडा प्रथा	प्रा.बोराडे तानाजी रामभाऊ	134
	कौटुंबिक हिसांचारापासुन महिलांचे संरक्षण कायदा 2005 आणि स्त्रियांपुढील आव्हाने –एक समजाशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. गायके एस.के., कांबळे एम.एस.	136
51.	कौटुंबीक हिंसाचार व स्त्रिया	कांबळे दलित सुभाषराव	140
52.	कौटुंबिक हिंसाचार कायदा–2005 आणि आव्हाणे	डॉ. रामचंद्र मुंजाजी भिसे	142
53.	मध्यम वर्गीय स्त्रियांपुढील आव्हाने	प्रा. कोल्हे टी. टी.	143
54.	महिला चळवळ आणि स्त्रिया	प्रा.डॉ. विजय दि. पोकळे	146
55.	महिला चळवळ आणि स्त्रिया	डॉ. यादव घोडके	149
56.	मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री और समाज	प्रा.श्रीमती पोटकुले हिरा	151
57.	भारतीय समाजव्यवस्थेत स्त्रिया आणि हुंडा प्रथा	भिमराव मोटे	153
58.	भारतीय महिलांसमोरील समस्यांचा समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा. परळकर शशिकांत दत्तोपंत	154
59.	लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	प्रा.डॉ. आचार्य आर. डी.	156
60.	महिला चळवळ आणि समाजसुधारकांचे योगदान	प्रा.डॉ. मोटे गितांजली सदाशिवराव	158
61.	स्त्रीवादी अभ्यास, विकास आणि स्त्रीया	प्रा. गोदावरी व्ही. बन	161
62.	भारतीय स्त्रि.विषयक कायद्याची वास्तविकता.विश्लेषत्मक अध्ययन	प्रा.सिताराम कचरु मोगल	164
63.	वैश्विक लैंगिक अंतराल में भारत की स्थिति का अध्ययन	प्रा. छाया एस. तोटवाड, प्रा. डॉ. सुर्यकांत टि. पवार	167
64.	लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	प्रा.सोनटक्के रमेश शंकरराव	169
65.	लिंगभाव विषमता आणि स्त्रिया	प्रा. सुलभा बब्रुवान सोळंके	172
66.	स्त्री विरोधी हिंसा- कारणे व उपाय	प्रा.डॉ.बी.एन.कावळे	174
67.	लिंगभाव असमानता आणि बांधकाम क्षेत्रातील स्त्रियांच्या समस्या	प्रा. भोसले एस.	176

Scanned with CamScanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-714
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved
Special Issue -92 , महिला सबलीकरणच्या समस्या : आव्हाने आणि उपाय | No. 40705

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री और समाज

प्रा.श्रीमती पोटकुले हिरा
कला व विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर गढी. गेवराई,बीड

साहित्य समाज का दर्पण है यही बात साहित्य के इतिहास से भी पुष्ट की जा सकती है। जिस युग में जैसा वातावरण या परिस्थितियॉ थी वैसा ही स्वरुप हिन्दी साहित्य के इतिहास में देखने को मिलता है। समाज और साहित्य का संबंध अनादि काल से चला आ रहा है। समय–समय पर कवियों और साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करने के साथ–साथ वास्तव चित्रण भी किया है। व्यक्ति, समाज,एंव साहित्य एक ऐसी कडी है जो एक दूसरे के बिना पूर्ण नहीं हो सकती। व्यक्ति का जन्म से लेकर मृत्यू तक का विकास समाज में सम्पन्न होता है। सम्बन्धों एंव आपसी अंत: क्रियाओं के कारण ही समाज का निर्माण होता है और यह सब व्यक्ति परिवार में रहकर ही सम्पन्न होता है । परिवार समाज का केंद्र है और परिवार में ही मनुष्य की सामाजिक क्रियाएँ आरम्भ होती है और परिवार में ही उसका विकास होता है। इन सारी क्रियाओं का परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण उपन्यासकार मैत्रयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में संयुक्त परिवार का चित्रण किया है परन्तु यही परिवार आगे चलकर संयुक्त परिवार किस प्रकार विघटित हो रहे है इसका चित्रण किया है। आज की परिस्थितियॉ इतनी बदल गयी है कोई भी नियमों,बंधनों में बॅधकर नहीं रहना चाहता इसी कारण संयुक्त परिवार धीरे–धीरे समाप्त होते जा रहे है। लेखिका ने संयुक्त परिवार के विघटन के कारण एकल परिवार के निर्माण की परिस्थितियों को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। भारतीय समाजव्यवस्था में

पति–पत्नी का रिश्ता जन्म जन्मांतर माना जाता है। स्त्री के बिना पुरुष व पुरुष के बिना स्त्री को पूर्ण नहीं कहा जा सकता। पति–पत्नी का संबंध रथ के दो पहियों के समान है यदि एक भी पहिया टूट जाता है तो रथ चल नहीं पाता। आज स्त्री को समानता का अधिकार प्राप्त हैं परन्तु समाज में पत्नी का दर्जा अत्यन्त निम्न है। मैत्रयी जी ने इसका चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। इंदन्नममं की कुसमा के माध्यम से लेखिका ने समाज के इस संकुचित मानसिकता पर प्रहार किया है–

'' गलत बनायी है मन्दा। एकदम पच्छपात से रची है। बताओ तो अग्नि साच्छी धरके गॉठ बांधने का क्या मतलब? पति और पत्नी को साथी–सहचर कहें तो विरथा है कि नहीं?कितके उल्टा है बिन्नू,बेअरथ यह संबंध बडा थोथा है। लो,एक तो खूँटे बॉधा पागुर,दूसरा सरग में उडता पंछी!ढोर और पंछी सहचर नहीं हो सकता मन्दा....।''१

पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में पुरुष ;पतिद्ध की दृष्टि में नारी की क्या अहमियत है? पति–पत्नी संबंधों की वास्तविकता को मैत्रेयी जी सूक्ष्मता से अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। पत्नी यदि पति के इच्छा के अनुकूल कार्य करती रहे तब तो वो घर की मालकिन है परन्तु यदि पति के इच्छा के विरुध्द कार्य करती है तो पुरुष समाज उसे उसकी स्थिति से अवगत करा देता है। भारतीय समाज में स्त्री शिक्षित हो या अशिक्षित उसे पुरुषी मानसिकता को सहना पडता है। आज बदलते परिप्रेक्ष्य में पत्नी का कार्य पति के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर चलना है परन्तु ऐसी स्थिति होती है तब पुरुष ;पतिद्ध का खूँखा पौरुष उसमें खलल पैदा करता है। इसका यथार्थ चित्रण मैत्रेयीजी ने 'विजन' उपन्यास में किया है। आभा के पति एवं ससुराल के व्यक्तियों द्वारा उसके कैरियर में व्यवधान उत्पन्न किये जाते है जब वह उसका विरोध करती है तो उसे मार–पिट और अश्लील गालियों को सहना पडता है। परन्तु अभा इस अपमान का प्रति उत्तर देती है–'' तुम कह सकते हो कि हमारे मुल्क में पति अपनी पत्नी को पीट देता है तो नया क्या है?.....मगर मुकुल न तो तुम उन पतियों जैसे जाहिल थे न मैं उन पत्नियों जैसी लाचार.....मैं तुम्हारे उस खूँखार पौरुषार्थ को नहीं झेल पाई।''२ मैत्रेयी

पुष्पा ने अपने उपन्यासों में पारिवारीक संबंधों को सुक्ष्मता से चित्रित किया है। भारतीय समाज में व्याप्त लिंग भेद की समस्या को अपने उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। भारतीय समाज में व्याप्त पुत्र–पुत्री संबधी धारणा को प्रस्तुत करते हूए बेटी की वेदना को मार्मिक रुप से प्रस्तुत किया है। पुरुषप्रधान समाज में बेटी के माता–पिता होने की अपनी व्यथा है। चाहकर भी मॉ–बाप बेटी के विवाह के पश्चात न तो उसके साथ रह सकते है,न आर्थिक दृष्टि से वह मॉ–बाप के दु:ख में तथा वृध्दावस्था में पुत्र के समान उनको सहारा दे पाती है। चाहे वह बेटे के समान ही आत्मनिर्भर क्यों न हो? मैत्रेयी पुष्पा ने पुराने और नवीन दोनों दृष्टिकोण को विश्लेषित किया है। हमारे भारतीय समाज में बेटा और बेटी में हमेशा भेदभाव दिखाई देता है। बेटा हमेशा घरका चिराग माना जाता है और बेटी पराई अमानत। इसका गहरा असर मॉ की ममता पर मिथ्या

Scanned with CamScanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue -92 , महिला सबलीकरणच्या समस्या : आव्हाने आणि उपाय

साबित कर देने वाला चित्र मैत्रेयी जी ने 'क्स्तुरी कुंडल बसै' में किया है। कस्तुरी की मॉ का कथन है– '' यह सतमासी तब जन्मी थी,जब बडा बेटा मरा था। सत्यनाशीनी का जन्म ही जंजाल की तरह आया। पेट में मॉ ने पसेरी मार ली थी वह फिर भी नहीं मरी। पैदा होते ही भंगिनी से फिंकवाई जा रही थी कि अभागी रो पडी बेटों को रोग–धोग व्यापे,इसे कभी छींक तक न आई। अरे... गाय मरे अभागे की,बेटी मरे सुभागे की मगर बेटा मरे तो सही।''३यही मानसिकता आज भी हमारे समाज में व्याप्त है। इसी सोच के कारण आधुनिक काल में लडको की तुलना में लडकियों की संख्या कम है।

लेखिका ने 'विजन' उपन्यास के माध्यम से नेहा के मॉ के द्वारा पितृसत्तात्मक समाज की सोच को सबके सामने पस्तुत किया है। नेहा मानती है कि कोई भी रुढ व अमानवीय कथन जो मॉ ने कहें हैं यह कथन तो उनका है परन्तु सोच पितृसत्तात्मक समाज की देन है। मॉ तो केवल पति के अनुशासन में तपकर ही इस सोच को ग्रहण कर पायी है। नेहा इसे व्यक्त तो नहीं कर पायी परन्तु उसके यह विचार,चिंतन समाज के लिए संदेश है '' नेहा मॉ को समझा नहीं सकेगी की,पुरुषों को प्रतिभा से ज्ञान से हौसले से प्रतिष्ठा मिलती है मगर ये ही गुण औरत के अवगुण माने जाते हैं तो क्यों? पुछो तो मॉ किसी से पुछो। बेटियों की मॉओं को यह सवाल जरुर सुलझाना होगा,तभी वे ऐसे सवालों से लडकियों को पीढी दर पीढी लादना छोडेंगी।'' ४.

भारतीय समाजव्यवस्था में स्त्री को अनेकानेक उपमा देकर उसे देवी बना दिया गया है परन्तु वास्तविकता यह है कि भारतीय समाज में स्त्री की यह त्रासदी है की वह बचपन से ही दुसरो पर निर्भर है। बचपन में पिता,यौवनावस्था में पति और वृध्दावस्था में पुत्र पर निर्भर हो जाती है। इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने अपने उपन्यासों में किया है। विधवापन एवं वृध्दावस्था ऐसी स्थितियॉ है जो पुत्र पर आश्रित रहने पर मजबूर कर देती है। इस स्थिति में मॉ को विवश होकर पुत्र के निर्णय के आगे झुकना पडता है। लेखिका ने 'अल्मा कबूतरी' में इसका चित्रण किया है। आनंदी भी मानती है कि पुत्रों के सहारे जीवन जिया तो जा सकता है परन्तु स्वयं निर्णय लेने के लिए वह स्वतंत्र नहीं है। आनंदी का कथन है–'' फिर यह तो जॉची परखी बात है कि पति के निगाह से गिरी औरत न बेटे के दिल में जगह बना पाए न किसी और के। तुम पिछे खारीज करोगे बेटा पहले नजरों से गिरा देगा। पूतों की कमाई चौडे में बैठकर कितनों ने खाई है,कोने में छिपकर भले ही पेट भरते है।''५ स्त्री जीवन का यह विदारक चित्र आज भी हमारे समाज में देखने को मिलता है। मैत्रेयी जी ने घरेलू एवं कामकाजी स्त्रियों की परंपरागत और बदलते परिवेश से उत्पन्न समस्याओं को अपने उपन्यसों के माध्यम से सशक्त रुप से अभिव्यक्त किया है। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में आज भी ऐसे पुरुष है जो नहीं चाहते कि स्त्री उनकी कैद से आजाद हो जाए। पुरुष का अहम स्त्री के स्वातंत्रय में बाधाएँ उत्पन्न करता है। आज का पुरुष भले कितना ही आधुनिक क्यों न हो जाए परन्तु अपनी पत्नी के प्रति उसकी मानसिकता परंपरागत ही रहती है। आज स्त्रियॉ परंपरागत दायरों से बाहर निकलने लगी है क्योंकि व्यक्तित्व के विकास के लिए घर से बाहर निकलना अंत्यत आवश्यक है। नारी ने शिक्षा के माध्यम से जब घर से बाहर निकलकर आर्थोपार्जन के क्षेत्र में प्रवेश किया तो पति–पत्नी संबंध हो या पारिवारीक रिश्ते–नाते में बदलाव उत्पन्न होकर अनेकानेक समस्याओं ने उसे घेर लिया। उसके सामने अनेक उलझनें पैदा हो गयी अत: स्पष्ट है कि आज भी नारी समाज की परंपरागत मान्यताओं को ढो रही है। भले ही स्त्री ने घर से बाहर निकलकर अपने अस्तित्व की पहचान बनाई हो फिर भी पुरुष की नजर में नारी कमजोर एवं असहाय है। स्त्री–पुरुष एक दुसरे के पूरक होने के बावजूद भी भारतीय नारी सामाजिक दृष्टि से अपमानित,प्रताडित एवं शोषित रही है इसका प्रमुख कारण है– पुरुष वर्चस्व,परुष प्रधान संस्कृति। मैत्रेयी की नारी परिवार,सामाजिक स्थिति,आर्थिक स्वालंबन,आस्तित्व,प्रतिष्ठा,अस्मिता के प्रति सचेत दिखाई देती है। मैत्रेयी जी का साहित्य नारी को सशक्त बनाने और समानता के धरातल पर लाने के लिए आधुनिकता की दृष्टि रखकर विभिन्न कोनों से प्रयत्न कर रहा है।

संदर्भ सूची–

१. इदन्मम – मैत्रयी पुष्पा पृ.८३
२. विजन – मैत्रेयी पुष्पा पृ.११९
३. कस्तुरी कुंडल बसे – मैत्रेयी पुष्पा पृ.१३
४. विजन – मैत्रेयी पुष्पा पृ.१२२
५. अल्मा कबुतरी – मैत्रेयी पुष्पा,पृ.१५६
६. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज– डॉ. कल्पना पटेल.

Scanned with CamScanner